दिल्ली-दिलशाद गार्डन। सात दिवसीय राजयोग कोर्स कराने के बाद समूह चित्र में अनंत ज्योति हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. मूलचंद, हॉस्पिटल स्टाफ व ब्र.कु. गीता।

कादमा-हरियाणा। नवचयनित आई.ए.एस. प्रमोद श्योराण को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वसुधा।

वाराणसी-गायघाट। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान विधायक रविन्द्र जायसवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु।

सीतापुर-उ.प्र.। 'परमात्म शक्तियों की अनुभूति' कार्यक्रम में चेयरमैन आशीष मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. योगेश्वरी। साथ हैं ब्र.कु. उमा व अन्य।

कानपुर। उदयपुर गाँव आश्रम के श्री दिव्यांश जी महाराज को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दीपा व ब्र.कु. ममता।

मंडी-चैल चौक। होम गार्ड के 6वीं बटालियन में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. प्रो. ओंकार। ध्यानपूर्वक सुनते हुए होम गार्ड के जवान।

कृष्ण-किरदार एक-पहलू अनेक

कृष्ण केवल एक किरदार मात्र नही परंतु एक सम्पूर्ण कथा, एक आख्यान है। कृष्ण को समझना इतना आसान भी नहीं है। कृष्ण की कई छटाएं हैं। कृष्ण ने अपनी कुछ छटाओं को अन्य कुछ किरदारों के साथ सम्पर्क में आते हुए खोला है। फिर चाहे कृष्ण-राधा हो, कृष्ण-मीरा हो, कृष्ण-कुंती हो, कृष्ण-द्रौपदी या सत्यभामा हो, कृष्ण-अर्जुन हो, कृष्ण-कर्ण हो, कृष्ण-सुदामा हो, कृष्ण ने हर संबंध में आते हुए अपनी अलग पहचान के साथ देखने और सुनने वालों को कुछ संदेश दिया है। इसलिए कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का वर्णन हम सुनते और नाट्य रुपांतर के माध्यम से बड़ी रुचि से देखते आये है।

एक बार कृष्ण अपने आत्मीय सखा कर्ण से मिलने गये। हमने कृष्ण और कर्ण की मित्रता के बारे में बहुत कम सुना होगा, परंतु कृष्ण और कर्ण के बीच अन्तरंग मित्रता थी और वे घन्टो बिना कुछ कहे-सुने एक दूसरे के साथ समय बिताया करते थे। कर्ण कृष्ण को अपना एकमात्र और आत्मीय हितैषी समझता था। एक दूसरे को गहराई तक समझना यही तो मित्रता की मांग होती है। बहुत कम बोलते थे दोनों आपस में। बहुत समय के मौन के बाद अपने विचारों की गहराई से बाहर निकलते हुए कर्ण ने पुछा "पार्थ, तुम्हारी बासुरी का क्या रहस्य है?" कृष्ण ने अपने हाथ में थामी बासुरी को निहारते हुए कहा- " मित्र, देह की बासुरी में हृदय के अंतस की मधुर भावनाओं की फूंक मारने से हृदय की व्यथायें भी नादमुग्ध हो जाती हैं।" बड़ा ही मार्मिक जवाब दिया था कृष्ण ने। कर्ण अपने जीवन की व्यथाओं से जूझ रहा था, उसे स्वयं ही स्वयं का परिचय नहीं था। उसकी व्यथाओं को केवल कृष्ण ही समझ पाता था और इसलिए वह उसके साथ मौन में रहकर भी समय बिताता था, मानों उसकी व्यथाओं को अपने भीतर अवशोषित कर रहा हो।

हमने कृष्ण और अर्जुन की मित्रता के बारे में भी बहुत सुना है परंतु कृष्ण की कर्ण के साथ आत्मीय संबंध की यह छटा ही कुछ निराली है।

एक बार अर्जुन ने कृष्ण से पूछा " आप हमेशा कर्ण की दानवीरता की तारीफ करते हैं, परंतु मेरे भ्राता युधिष्ठिर भी तो दान और धर्म के लिए जाने जाते हैं। तो आप कर्ण को सबसे श्रेष्ठ कैसे कह सकते हैं ?" कृष्ण ने कहा, तुम्हारे प्रश्न के उत्तर की खोज हम कल करेंगे। दूसरे दिन दोनों ब्राह्मण के वेश में युधिष्ठिर के दरबार में

पहुंचे और उनसे भोजन बनाने के लिए चंदन की लकड़ी की माँग की। युधिष्ठिर ने अपने सैनिकों को जंगल में भेजा, लेकिन पिछले दिन की बारिश के कारण सारी लकड़ियां गीली हो चुकी थीं, अतः उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा। युधिष्ठिर की अ-समर्थता देखकर दोनों ब्राह्मण वेशधारी कृष्ण और अर्जुन ने कहा कि कोई बात नहीं, हम कल भोजन के लिए आयेंगे। उसके बाद दोनों कर्ण के पास पहुंचे और वही मांग की। कर्ण को ज्ञात था कि इस समय जंगल की सभी लकड़ियां गीली होंगी, अतः उसने कुछ क्षण सोचा, अपने अतीथियों को स्थान ग्रहण करने को कहा। पश्चात् अपना तीर कमान लेकर अपने महल का दरवाज़ा तोड़कर उसकी निकली हुई चंदन की लकड़ी लेकर दोनों ब्राह्मणों के सम्मुख रखी और कहा महाराज! आप जितनी लकड़ी इस्तेमाल करना चाहें अवश्य करें। ईश्वर अपने हर बच्चे की विशेषताओं को अच्छी रीति जानते हैं और उनका उचित सम्मान भी करते हैं। परमात्मा की महिमा अगाध है और उनका हर आत्मा को जानने और समझने का तरीका भी अलग है।

महाभारत और रामायण जैसी सर्व कथाओं के पात्र हम सब के जीवन की परछाई मात्र हैं। वे सब वही कहते और करते हैं जो हम इस समय कर रहे हैं। वे हमारे रूपक मात्र हैं। परंतु कृष्ण परमात्मा शिव का रूपक है। शिव तो निराकार है, उनकी लीलाओं को हम साकार स्वरूप में अनुभव कर सकें, इसलिए उन्हें कृष्ण के पात्र के साथ जोड़ा गया है। भगवान के अगाध चरित्रों का दर्शन कृष्ण के किरदार से होता है।

सेन फ्रान्सिसको। अनुभूति रिट्रीट सेंटर में 'कमिन्ग होम:द पाथ टू द लाइट' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुदेश,जर्मनी।

मंगोलिया। टेलिकॉम कम्पनी में 'हार्मनी इन रिलेशनशिप' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुधा,मॉस्को व कम्पनी के स्टाफ।

टोरोन्टो। काउंसिल जेनरल ऑफ इंडिया अखिलेश मिश्रा के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. सुदेश,जर्मनी। साथ हैं ब्र.कु. शाशि व अन्य।

मलेशिया-कोटा किनावालू। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू व वहां के ब्र.कु. भाई बहनें।